REC LIMITED Director (Finance) Ajoy Choudhary Talk to

Driving Renewable Energy Growth: Anil Singhvi In Chat with REC's Finance Director, Ajoy Choudhury

एंकर – 1969 में यह कंपनी महारत्न एनबीएफसी कंपनी बनी है। राज्य, केंद्र सरकार और साथ ही निजी कंपनियों को इंफ्रास्ट्रक्चर ऐसेट बनाने के लिए कर्ज देती है। मुख्य तौर पर पावर और इंफ्रा यह दो सेक्टर ऐसे हैं जहां पर फाइनेंसिंग करने का काम आरईसी का है, और सरकारी योजनाओं को फाइनेंस करके देश में 100 परसेंट इलेक्ट्रिफिकेशन करने में आरईसी की बड़ी भूमिका है।

हमारे साथ कार्यक्रम में शामिल हो रहे हैं आरईसी के डायरेक्टर फाइनेंस अजॉय चौधरी। 2007 से आप कंपनी के साथ हैं। जून 2020 से आप डायरेक्टर फाइनेंस बने हैं। इससे पहले पावर ग्रिड और एनएचपीसी जैसी दिग्गज पावर कंपनी के साथ काम करने का सर का बड़ा गहरा लंबा अनुभव है। आईसीएम के एसोसिएट मेम्बर हैं, जिसे पहले आईसीडब्ल्यूए के नाम से आप जानते थे और इस सेक्टर का 35 साल से ज्यादा लंबा गहरा अनुभव अजय चौधरी सर का है।

सर बहुत-बहुत स्वागत है आपका, धन्यवाद हमें समय देने के लिए, इस वक्त पावर सेक्टर स्वीट स्पाट में नजर आ रहा है। अभी हमने एक जेफरीज की रिपोर्ट पढ़ी, जिसमें उनका कहना है कि 2023 से 2026 के बीच में पावर कंपनी का कैपेक्स जो पावर कंपनी निवेश करने वाली है, वह लगभग-लगभग नौ गुना बढ़ सकता है। इतना जबरदस्त कैपेक्स आ रहा। जाहिर सी बात है, सब पैसे लेने तो आपके पास आएंगे। सबसे बड़े फाइनेंसर आप हैं। ऐसे में कितने बड़े मौके बन रहे अगले दो-तीन साल में आरईसी के लिए इस पावर सेक्टर की डिमांड और कैपेक्स को लेकर।

श्री अजॉय चौधरी – धन्यवाद अनिल जी, मुझे आपने शो में बुलाया। पावर सेक्टर में एक तेजी आई है। एक तो पावर की डिमांड बढ़ रही है और डिमांड बढ़ने का सीधा-सीधा कारण होता है कि इकनॉमी ग्रो कर रही है। भारत सरकार की जो मुख्य योजनाएं हैं डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया और इंफ्रास्ट्रक्चर पर जोर। ये सारी चीजें एक साथ बढ़ रही हैं तो पावर डिमांड बढ़ रह है।

दूसरा, जो एनर्जी ट्रांजेक्शन का दौर चला है, जिसमें हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने एक लक्ष्य रखा है कि 500 गीगावाट का हम रिन्यूबल सोर्सेस से हमारे प्रोजेक्ट, हमारे पावर प्रोड्यूस होंगे 2030 तक और 45% सारे पावर का जो मिक्स है वो रिन्यूबल सोर्सेस से आएगा। उससे बहुत एक जोर मिला है एनर्जी ट्रांजिशन को और उसकी वजह से हम देख रहे हैं कि बहुत इन्वेस्टमेंट आ रहा है इस सेक्टर में।

उम्मीद है कि 2030 तक करीब-करीब 10 से 15 लाख करोड़ तक का इसमें इन्वेस्टमेंट होने की उम्मीद है। दूसरा जो एक अच्छी चीज हुई है, वो है डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर में जो रिफॉर्म हुआ है, जहां पर कि डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर में जो घाटे में चल रही थी यूटिलिटीज उनका पेमेंट नहीं आता था। लेकिन अब वो बहुत हद तक उसको सुलझा दिया गया है और उसकी वजह से हम देख रहे हैं कि इन्वेस्टर में भी एक उत्साह आया है और एनर्जी ट्रांजिशन को भी एक पुश मिला है।

तो ये इन सब कारणों से हम देख रहे हैं कि तेजी आई है और जाहिर सी बात है कि सारे पावर सेक्टर कंपनियां इससे बिल्कुल बेनिफिट करेंगी और हम लोग भी।

एंकर – अजय सर, थर्मल कोल तो आप कर रहे हैं। अब नया फोकस रिन्यूएबल और ग्रीन एनर्जी पर भी है। वहां पर आपकी बुक कितनी है और आगे क्या टारगेट है?

श्री अजॉय चौधरी – अभी हमारा धीरे-धीरे जैसे थर्मल पर जो फोकस है वो कम हो रहा है। सरकार का भी, हालांकि बेस लोड थर्मल से आएगा। तो ऐसा नहीं है कि थर्मल बिल्कुल ही चला जाएगा, थर्मल भी रहेगा। लेकिन हां रिन्यूवल के बढ़ने से थर्मल की भूमिका कम हो जाएगी। हमारा जो रिन्यूबल का पोर्टफोलिया अभी हमारे पोर्टल में सात पर्सेंट का है। करीब 30,000 करोड़ का हमारा बुक है और इसको हम ले जाना चाहते हैं 2030 तक करीब-करीब 3,00,000 करोड़ तक। बहुत बड़ा एक सफर तय करना है, हमारा टारगेट है कि 2030 तक हमारी टोटल बुक 10,00,000 करोड़ की हो और उस पर 3,00,000 करोड़ जो है, रिन्यूबल सोर्सेस से

आए। और जैसा कि रिन्यूएबल सेक्टर में जो एक तेजी आई है, उसमें बहुत निवेश हो रहा है, तो यह कोई बहुत मुश्किल भी नहीं है।

एंकर – बहुत बड़ा टारगेट रखा है आपने और उम्मीद करते हैं आप अचीव भी करेंगे। जिस स्ट्रांग फुटिंग पर आपकी कंपनी है, एक और हाल ही में बड़ा डेवलपमेंट हुआ G-20 में, जो एक मिडिल ईस्ट से यूरोप तक कॉरिडोर बन रहा है इकोनॉमिक कॉरिडोर। जाहिर सी बात है उसमें आपकी कंपनी की भी भूमिका तो रहेगी। किस तरह के बिजनेस और कहां पर आने की उम्मीद है?

श्री अजॉय चौधरी – देखिए, G-20 में बहुत ज्यादा जोर इकनॉमिक कॉरिडोर और एनर्जी ट्रांजिशन पर भी दिखा। हर बार अगर आप पहले से भी देखें, जो पेरिस समिट हुआ था और उसके बाद इंडोनेशिया में भी हुआ था। इस एनर्जी ट्रांजिशन पर तो हमारा जोर, आरईसी जैसी कंपनियों का जोर रिन्यूबल एनर्जी पर ही ज्यादा रहेगा।

हमने अभी रिसेंटली एक हाइड्रोजन प्रोजेक्ट पर फाइनेंस किया है। ओमान में बन रही है। यह इंडियन कंपनी बना रही है। ओमान में सेटअप होगा और यूरोपियन कंट्रीज को यह हाइड्रोजन सप्लाई होगी। तो हम इस तरह के प्रोजेक्ट और भी लेना चाहेंगे ताकि ग्लोबली भी हमारे लिए एक स्टैंड बन जाए।

एंकर – सर, अभी-अभी आपको एक अप्रूवल और मिला है, दो बड़े अपकमिंग सेक्टर। एक अपकमिंग और एक बड़ा सेक्टर, एक अपकमिंग लॉजिस्टिक और बड़ा सेक्टर है इंफ्रा। इन दोनों में भी अब आप फाइनेंस कर सकते हैं। पावर के अलावा, तो यहां किस तरह का आप आगे स्कोप देख रहे हैं? क्या कुछ हो सकता है, कितना कॉन्ट्रिब्यूशन, कितना डिस्बर्समेंट हो सकता है?

श्री अजॉय चौधरी – इंफ्रा और लॉजिस्टिक्स में बहुत स्कोप है। हमने भी देखा है कि जब से हम इस तरफ बढे हैं तो बहुत सारे प्रोजेक्ट हमारे पास आए हैं। लेकिन चूंकि अभी हम इसमें पूरी तरह से उसकी इंटीग्रिटी को नहीं जान पाए हैं तो हम लोग अभी सेफ प्रोजेक्ट्स में ही जा रहे हैं। लेकिन स्कोप बहुत बड़ा है तो हम चाहते हैं कि इसमें भी हम करीब-करीब 30% का हमारा पोर्टफोलियो बने, जो हमने अभी इंटरनली डिस्कस किया है मिनिस्ट्री से भी, तो करीब 30% का पोर्टफोलियो, अभी हमारा साढ़े 4 लाख करोड़ का है तो अभी हम डेढ़ लाख करोड़ तक तो जा सकते हैं और उसके बाद जैसे हमारा बुक बढ़ेगा वैसे-वैसे यह बढ़ेगा, तो इसमें हमारे पास रोड्स का आ रहा है, एयरपोर्ट के आ रहे हैं, मेट्रो के हमने बहुत बड़ा प्रोजेक्ट लिया मुंबई मेट्रो का। तो काफी संभावनाएं बन रही है।

एंकर – सर मुझे बताएं, जिस समय इंडस्ट्री की आपको लिमिट है क्या जो 67% तो आपका पोर्टफोलियो मिनिमम पावर कई होना चाहिए? लिमिट है या यह लिमिट बदल सकती या बदलने वाली है?

श्री अजॉय चौधरी – हमारा आर्टिकल्स में तो कोई ऐसा लिमिट नहीं है, लेकिन इंटरनल जो हमने मिनिस्ट्री से बात किया है, उसमें हमने अभी फिलहाल एक लिमिट तय किया है कि वन-थर्ड हम लोग इंफ्रा तक जाएंगे और बाकी हमारा फोकस तो पावर में है ही।

एंकर – वन-थर्ड, इंफ्रा मतलब पावर टू-थर्ड और वन थर्ड बाकी सारे बिजनेस। ओके, पर एक और चीज बताएं सर, अब आपसे जो मैं बात करके समझ रहा हूं कि आरईसी खाली पावर सेक्टर को फाइनेंस करने वाली कंपनी नहीं रहेगी। दूसरी तरफ बड़ा रोल निभाएगी। चाहे वह इंफ्रा में हो, लॉजिस्टिक्स में हो, जो मुझे समझ में आया। शायद आप स्मार्ट मीटर और इलेक्ट्रिक व्हीकल्स में भी। आप वहां भी फाइनेंसिंग करने की सोच रहे हैं।

श्री अजॉय चौधरी – स्मार्ट मीटर तो पावर सेक्टर का ही पार्ट है। आरडीएसएस स्कीम भारत सरकार ने चलाई है, उसमें एक महत्वपूर्ण भूमिका है स्मार्ट मीटर की। ताकि यह जो कलेक्शन वगैरह का जो इशू है, यह प्रीपेड स्मार्ट मीटर होंगे। तो इसमें भी हम लोगों की भूमिका है। तो इसमें जो बिडर्स आ रहे हैं, बहुत सारे जो यह लोग बनाएंगे। पूरा का पूरा स्पेस स्मार्ट मीटर्स डेवलप करेंगे और उसका पूरा एक सेंट्रल सॉफ्टवेयर अरेंजमेंट

करेंगे तो ऐसे लोग हमारे पास काफी आ रहे हैं जो फाइनेंस के लिए उसमें भी हमारी भूमिका रहेगी। और नोडल एजेंसी तो हम और पीएफसी हैं।

एंकर – डिफेंस का नाम नहीं सुना आपसे, डिफेंस में वहां भी फाइनेंसिंग का स्कोप है। यहां अभी थोड़ा वक्त है।

श्री अजॉय चौधरी – वहां अभी थोड़ा वक्त है। अभी डिफेंस में हमारा फिलहाल एक्सपोजर नहीं है। उसमें थोड़ा वक्त लगेगा।

एंकर – एक डेवलपमेंट पिछले हफ्ते ही हुआ है। जेपी मॉर्गन के ग्लोबल बॉन्ड इंडेक्स में इंडिया को शामिल किया गया। भारत को शामिल किया गया है। आपका कॉरपोरेट बॉन्ड्स में से लगभग लगभग 40 पर्सेंट बॉरोइंग आपकी वहां है। आपको बॉरोइंग में कुछ फायदा होगा। जब ये चीजें लागू हो जाएगी, कुछ फर्क पड़ेगा।

श्री अजॉय चौधरी – इसमें जरूर, क्योंकि बाहर के निवेशक इसमें ज्यादा पार्टिसिपेट करेंगे। बॉन्ड्स में तो उससे जो इनफ्लो है बॉन्ड का वह बढ़ेगा। तो इसमें नैचुरली जो भी बॉन्ड्स पड़ते हैं, उन सभी कंपनियों को फायदा होगा और उसमें प्राइसिंग में थोड़ा सा हमें उम्मीद है कि बेनिफिट जरूर मिलेंगे।

एंकर – सर, एक तरफ आपके बिजनेस मजबूत है, लेकिन दूसरी तरफ रिकवरी को लेकर भी मैं एक सवाल पूछना चाहता हूं। 13,000 करोड़ के टोटल प्रोजेक्ट ऐसे हैं जो आपके एनसीएलटी में हैं, जिसमें आप करीबन-करीबन से 4% प्रोविजनिंग भी कर चुके। राइट्स इस साल कितनी रिकवरी की उम्मीद की जाए?

श्री अजॉय चौधरी – इस साल हमारा जो टारगेट है कि सात हज़ार करोड़ तक हम रिजॉल्व कर दें और इसमें प्रोविजनिंग हमारी कंप्लीट है तो इसमें कुछ राइट बैक ही होगा। हमारे बुक्स में, तो हमने टारगेट किया सात हज़ार करोड़ का। तो हमें उम्मीद है कि इतना तो हम कर ही लेंगे और बाकी का जो है, वह अगले साल पूरा साफ कर देंगे हमारी। हमारा जो टारगेट है कि हम एनपीए जीरो कंपनी हो जाए, मार्च 25 तक।

एंकर – वंडरफुल सर, ऐसा स्टेटमेंट सुनने में अपने आप में मजा आता है। वह भी अगर एक सरकारी क्षेत्र की कंपनी इतने बढ़िया और एग्रेसिव टारगेट रखें। क्या कहना। पहली तिमाही आपके लिए बहुत मजबूत थी। आपने हाईएस्ट सैंक्शन की है। ठीक है और पावर सेक्टर तो एकदम फायर पर है, बिल्कुल जबरदस्त चल रहा है। दरअसल समझाएं कि पूरा वित्त वर्ष 2024 आपके लिए कंपनी के लिए किस तरह का रहेगा। नीम के सवा 23% पर, सवा तीन परसेंट के आसपास जो है उसको लेकर क्या गाइडेंस से थोड़ी फाइनेंशियल परफॉर्मेंस के बारे में अंदाजा नहीं था।

श्री अजॉय चौधरी – या तो हमने जो इस बार का इस साल का टारगेट रखा था, वह करीब-करीब जिस परसेंट का 1,20,000 करोड़ का शुरू में हमने बताया था लेकिन जिस तरह से अभी चल रहा है, हम इसको जरूर एक्सीड करेंगे। और हमें लगता है कि हम इससे आगे जाएंगे। करीब करीब हो सकता है या डेढ़ लाख करोड़ तक। अभी कुछ भी कहना थोड़ा मुश्किल है। लेकिन जिस तरह से आपने कहा। फर्स्ट क्वार्टर में हुआ है और आगे भी ऐसी ही उम्मीद है तो हमें ऐसा लगता है कि डिस्बर्समेंट तो अच्छा होगा।

निम देखें, हमारा जो एसेट क्वालिटी में जो हमारा फोकस है, उसकी वजह से थोड़ा सा कम हुआ है, लेकिन हम इसको साढ़े तीन तक ले जाना चाहेंगे। अगर हमारी कोशिश यही है। अभी हमने दो तीन दिन पहले थोड़ा सा रेट भी बढ़ाया है इसलिए। लेकिन निम के लिए हम अपनी एसेट क्वॉलिटी के साथ किसी तरह का कोई कंप्रोमाइज नहीं करेंगे हमारे। हमारा यही है कि निम्न चाहे थोड़ा बहुत हमें सैक्रिफाइस करना पड़े। 10 या 15 तक हम अपनी एसेट क्वालिटी का पूरा ध्यान रखेंगे।

एंकर – आरईसी जैसी दिग्गज कंपनी इतनी बड़ी बुक पर अगर 25 बेसिस पॉइंट भी बढ़ा दें तो यह बड़ी बात है। एक आखिरी सवाल सर वैसे तो मेरे खत्म हो गए, लेकिन चूंकि आपसे बात करके मुझे बड़ा मजा आ रहा

है, बड़ी डीप इनसाइड भी मुझे मिल रही है। मुझे यह समय से आरईसी के लिए बिजनेस के लिहाज से यह गोल्डन पीरियड चला। सबसे बढ़िया समय।

श्री अजॉय चौधरी – हां, एक बहुत अच्छा पीरियड चल रहा है। हम जरूर कहेंगे क्योंकि एक तरफ देखिए डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर जो कि शुरू से एक प्रोब्लेमेटिक सेक्टर था, यह धीरे-धीरे सुधर रहा है। अब देखिए 1 लाख 40 हज़ार करोड़ के ड्यूज थे जनरेशन और उनकी कंपनी के, वो 70,000 से भी कम आ गए हैं। अभी ये 50% से भी कम है तो इनवेस्टर्स को एक बहुत बड़ी राहत मिली है। अब कोई भी करंट ड्यूज किसी तरह का कोई बकाया नहीं है। हमारी रिकवरी 99.6% होती है। हालांकि अभी किसी तरह की रिकवरी में कोई दिक्कत नहीं है। एनर्जी ट्रांजिशन में एक बहुत बड़ा उछाल आया है तो बहुत काम करने का मौका है। साथ ही इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर बहुत अच्छा लग रहा है। बहुत रोड, पोर्ट्स, एयरपोर्ट, मेट्रो, इरीगेशन के प्रोजेक्ट्स आ रहे हैं, जिसमें काफी जोर है। तो डेफिनेटली एक अच्छा पीरियड तो चल रहा है। ये हम कह सकते हैं।

एंकर – एक जगह से छोटा सा क्लेरिफिकेशन जो आपने कहा कि 2025 तक आप एनपीए जीरो करना चाहते हैं। नेट और ग्रॉस दोनों लेवल पर होंगे।

श्री अजॉय चौधरी – दोनों अलग-अलग।

एंकर – बहुत-बहुत धन्यवाद सर आपने समय दिया और बहुत विस्तार से और पूरा गाइडेंस दिया। आरईसी के इन्वेस्टर्स आपकी बातें और गाइडेंस सुनकर बहुत खुश होंगे। थैंक यू सो मच सर, हमें समय देने के लिए धन्यवाद आपका।